



ལྷན་པོ་ལྷན་པོ་
ROYAL BHUTAN POLICE



RBP/ICPU/Samtse/A-208/2024()

Date: 13.05.2024

Handover of Mr. [REDACTED] Dorji (alias [REDACTED] Wangdi) to His Father, Mr. [REDACTED] Wangdi

This is to handover Mr. [REDACTED] Dorji, aged 39, to his father, Mr. [REDACTED] Wangdi. Mr. [REDACTED] Dorji, also known by the alias [REDACTED] Wangdi, had been reported missing approximately in 2011/2012 and he was mentally unsound as well. He was under the care and treatment of the Shhraddha Rehabilitation Foundation of India in 2023.

On May 12, 2024, two officials from the Shhraddha Rehabilitation Foundation arrived at the Samtse Checkpost in efforts to locate Mr. [REDACTED] Dorji's family. With the assistance and dedication, we were able to locate Mr. [REDACTED] Dorji's brother, Mr. [REDACTED] Wangdi, and establish contact. Through Mr. [REDACTED] Wangdi, we were able to confirm that Mr. [REDACTED] Dorji's father, Mr. [REDACTED] Wangdi, works as a cook at Gyelsung project, Jamtsholing.

Following verification from the census department, it has been confirmed that his census name is [REDACTED] Dorji and his pet name is [REDACTED] Wangdi. He was born in 1985 to Mr. [REDACTED] Wangdi, who hails from Bidung, Tashigang, and later settled in Thimphu.

With these details in place, the ICP, Samtse is facilitating the handover of Mr. [REDACTED] Dorji to his father, Mr. [REDACTED] Wangdi, on May 13, 2024, in the presence of Mr. Samar Basak and Nikhilesh Sangada, the social worker from the Shhraddha Rehabilitation Foundation.

We express our sincere gratitude to Mr Samar and Nikhelesh and Shhraddha Rehabilitation Foundation in this process and extend our best wishes to Mr. [REDACTED] Dorji and his family for a smooth reunion and a bright future ahead.

Handed over by

Taken over by

Mr Samar

Mr Nikhelesh

Mr. Namgay Wangdi (Father)

১৩ বছর পর বাবার কাছে ফিরল ছেলে



ভক্ত দত্ত

ঝানসি, ১৩ মে : ছেলে আর পিতা দেখে, হঠাৎ নিঃশব্দে বাবা-মাকে ডাকলি। এক দু'বছর হোক না, দীর্ঘ ১৩ বছর ধরে সেন্সে ওয়াশিংটন বেঙ্গল খেঁচাই পাননি তিনি। অবশেষে প্রায় ১৩ বছর পর একটি কোম্পানী সার্ভিসের ওয়েব পিঠে দেখেন ফেরলেন।

কী ঘটছিল প্রায় দেড় দশক আগে। তখন সেন্সের স্বপ্ন ছিল ২৩ বছর। তাঁদের বাড়ি ভূটানের রাজধানী থিম্পুতে। এখানে সেন্সের বাবার সঙ্গে কথাবার্তা করে গল্প করে বাড়ি ছেড়ে চলে যান। বাবির বাড়ি ছেড়ে না, দেশে থেকে চলে আসেন তিনি। তাকে পড়ানো হত। সেখানে শিক্ষা অধিদপ্তর কর্তৃক বিভিন্ন জায়গায় খেঁচাই করলেও কেবলো খেঁচাই পাননি। বাবা হয়ে একসময় তিনি হারিয়ে নিঃশব্দে, ছেলে ছাড়াই মাজার পিঠে, সেইসঙ্গে মননিকি হারিয়ে নিয়ে নিঃশব্দে চললেন।

এদিকে, সেন্সের ঘুরতে ঘুরতে পৌঁছে যান কোম্পানী। সেখানে একটি প্রোগ্রামার কাজ করতেন। পরের দিনে ফেরলেন। প্রায় বসন্তকালি কাল হলে তিনি কর্মসূচী হয়ে পড়লেন। তখনই সেন্সের কোম্পানী থেকে একটি মেসেজ আসে।

সামান্য কিছুক্ষণের মধ্যেই তিনি সেন্সের বাবার সঙ্গে কথাবার্তা করে গল্প করে বাড়ি ছেড়ে চলে যান। বাবির বাড়ি ছেড়ে না, দেশে থেকে চলে আসেন তিনি। তাকে পড়ানো হত। সেখানে শিক্ষা অধিদপ্তর কর্তৃক বিভিন্ন জায়গায় খেঁচাই করলেও কেবলো খেঁচাই পাননি। বাবা হয়ে একসময় তিনি হারিয়ে নিঃশব্দে, ছেলে ছাড়াই মাজার পিঠে, সেইসঙ্গে মননিকি হারিয়ে নিয়ে নিঃশব্দে চললেন।

সামান্য কিছুক্ষণের মধ্যেই তিনি সেন্সের বাবার সঙ্গে কথাবার্তা করে গল্প করে বাড়ি ছেড়ে চলে যান।

যেন সিনেমা | বাবার সঙ্গে ঝগড়া করে ভারতে, 13 বছর পেল বাড়ি ফিরলেন ভূটানের শেওয়াং - Bhutanese Man Returns Home



13 বছর পেল ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন ভূটানের শেওয়াংকির হিউ

Bhutanese man returns home from India: 13 বছর পেল ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন ভূটানের শেওয়াং ওয়াং। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

মুখ্যমন্ত্রীর এক ঘোষণায় শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

ভূটানের শেওয়াংকির হিউ ভারত থেকে বাড়ি ফিরলেন। 13 বছর পর শান্তি পুত্র হয়ে বাড়ি ফিরলেন শিশুর এই মুক।

তেরহ বর্ষ সে লাপতা ভূটানী যুবক অপনে পিতা কে साथ स्वदेश लौटा

সংবাদসূত্র, চামুণ্ডী : এক ভূটানী নাগরিক ভারত মৈ করী 13 साल तक लापता होने के बाद सोमवार को अपने पिताजी से मिला। मुलाकात के दौरान बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगाते हुए अपने स्नेह को ज्वलत किया। चामुण्डी चैक पोस्ट स्थित साम्से भूटान गेट पर भूटानी युवक को लेने उनके पिता नामची वांग्मो आए थे। भूटान की सभी प्रशासनिक एवं कर्मन्त्री प्रक्रिया को पूरी करने के बाद वह अपने बेटे फो-से वांग्मो को अपने घर ले गए।

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के पश्चात फो-से वांग्मो लापता हो गया था। उसके पिता द्वारा कई जगह तलाश के बाद भी अपने बेटे का कोई सुराग नहीं लगा सके। उन्हें लगा उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन अचानक फिर से 13 वर्ष बाद उन्हें लापता हुए उनके बेटे को मिलने से उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। मुंबई के अग्रदक्षिण दिशि भूटान फार्डरेशन के



भारत-भूटान सीमा पर पित के साथ फो-सी वांग्मो

अपने पिताजी से अनजान होने के पश्चात यह युवक भारतीय सीमा में प्रवेश कर भाग गया। कई वर्षों तक दक्षिण भारत के चेन्नई में इस लड़के ने होटल में काम किया। कोरोना महामारी के समय जब यह युवक रोजगार विहीन हो गया, तो मानसिक रूप से काफी बीमार पड़ गया। फिरने ने इस लड़के को सड़क पर पड़ा हुआ पाया। एवं इस भूटानी नागरिक को चेन्नई के एक मानसिक अस्पताल में लाया गया।

13 वर्षों तक गुमशुदगी के बाद भूटानी युवक की हुई स्वदेश वापसी

संवादसूत्र, चामुण्डी : एक भूटानी नागरिक भारत में करीब 13 साल तक लापता होने के बाद सोमवार को अपने पिताजी से मिला। मुलाकात के दौरान बाप-बेटे ने एक दूसरे को गले लगाते हुए अपने स्नेह को ज्वलत किया। चामुण्डी चैक पोस्ट स्थित साम्से भूटान गेट पर भूटानी युवक को लेने उनके पिता नामची वांग्मो आए थे। भूटान की सभी प्रशासनिक एवं कर्मन्त्री प्रक्रिया को पूरी करने के बाद वह अपने बेटे फो-से वांग्मो को अपने घर ले गए।

उल्लेखनीय है कि 2011 में भूटान से भारतीय सीमा में प्रवेश करने के पश्चात फो-से वांग्मो लापता हो गया था। उसके पिता द्वारा कई जगह तलाश के बाद भी अपने बेटे का कोई सुराग नहीं लगा सके। उन्हें लगा उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। लेकिन अचानक फिर से 13 वर्ष बाद उन्हें लापता हुए उनके बेटे को मिलने से उन्हें यकीन ही नहीं हुआ। मुंबई के अग्रदक्षिण दिशि भूटान फार्डरेशन के

- 2011 में पिता से झगड़े के बाद भारत में किया था प्रवेश
- मुंबई की सामाजिक संस्था के प्रयासों से फिर घरवालों से मिला



भारत-भूटान सीमा पर पित के साथ फो-सी वांग्मो

अपने पिताजी से अनजान होने के पश्चात यह युवक भारतीय सीमा में प्रवेश कर भाग गया। कई वर्षों तक दक्षिण भारत के चेन्नई में इस लड़के ने होटल में काम किया। कोरोना महामारी के समय जब यह युवक रोजगार विहीन हो गया, तो मानसिक रूप से काफी बीमार पड़ गया। फिरने ने इस लड़के को सड़क पर पड़ा हुआ पाया। एवं इस भूटानी नागरिक को चेन्नई के एक मानसिक अस्पताल में लाया गया।